वन के मार्ग में

Class VI (Hindi 2nd lang)

शब्दार्थ

(1) "पुर तें निकसी रघुबीर-बधू - - - - - -
. . . . . चारु चली जल च्वै ।।"

पुर तें - नगर से
निकसी - निकली

रघुबीर-बधू - सीता
धरि - रखना /अरना
धीर - धैर्य
दए - रखना
मग में - वन के मार्ग में
डग द्वै - दो कदम तक

झलकीं - झलका
भाल - माथा
कनी - कण
जल की - पसीने की
पुट - होंठ

सूखि गए - सूख गए
मधुराधर - मधुर अधर (होंठ)
बूझति - पूछती
केतिक - कहाँ
पर्नकुटी - पत्तों की कुटिया
करिहौं - करना है
कित है - कहाँ है

तिय - पत्नी की
लखि - देखकर

आतुरता - बेचैनी
पिय - प्रियतम /राम
अखियां - आँखे
चारु - सुंदर
जल च्वै - आंसू चूना ।

व्याख्या - तुलसीदास जी कहते हैं कि राजमहल को छोड़कर सीताजी वन मार्ग की ओर चली और दो कदम तक ही अर्थात थोड़ी देर तक ही अपने धैर्य को रख पाई । थोड़ी ही देर में उसकी माथे पर थकान के कारण पसीने की बूँदे

झलक उठी। थकान के मारे सीताजी पूछती हैं कि अब हमें और कितना चलना है? पत्तों की कुटिया कहाँ बनानी है? तुलसीदास जी कहते हैं कि पत्नी की बेचैनी को देखकर रामचंद्र के सुंदर आँखों से आँसू बहने लगे।

प्रस्तुत सवैया में रामचंद्रजी का सीता के प्रति प्रेम तथा उदारता प्रकट हुआ है।

(2) "जल को गए लक्खनु .... बिलोचन बाढ़े।

शब्दार्थ

लक्खनु - लक्ष्मण	पोंछि पसेउ - पसीने को पोंछना
परिखौं - प्रतीक्षा करना	बयारि - हवा में
लरिका - लड़का	अरु - और
छाँह - छाया	पाँय - पैरों को
घरीक - एक घड़ी/थोड़ी देर	पखारिहौं - धो लीजिए
	भूभुरि-डाढ़े = रेत बहुत गरम है
रघुबीर - रामचंद्र	किंतु लौं - थोड़ी देर तक
प्रियाश्रम - प्रिया के ऊपर	कंटक - काँटे
जानि कै - जानकर	काढ़े - निकालने लगे
जानकी - सीता	नेह - स्नेह
नाह को - राम के	लख्यो - देखकर
	पुलकौ - पुलकित हो गया
तनु - शरीर	बारि - जल / आँसू
बिलोचन - आँखों से	बाढ़े - निकले।

व्याख्या - तुलसीदास जी सीता के संबंध में कहते हैं कि वन के मार्ग में सीता की थकान को मिटाने के लिए लक्ष्मण पानी लेने जाते हैं। तब सीता रामचंद्र से कहती है कि लक्ष्मण जल को लेने गए हैं। हमें लक्ष्मण की प्रतीक्षा करनी है। अतः छाँव में आकर थोड़ी देर के लिए खड़े हो जाइए। वह राम से कहती है कि छाँव में आकर हवा में बैठिए तथा अपने पसीने को पोंछ लीजिए तथा रेत बहुत गरम है इसलिए पैरों को ठंडे पानी से धो लीजिए। तुलसीदास जी कहते हैं कि सीताजी के कष्ट को देखकर रामचंद्र थोड़ी देर के लिए छाँव में बैठते हैं और सीता के पैरों से चुभे हुए काँटो को निकालने लगते हैं। जानकी अपने प्रिय के प्रेम को देखकर आनंदित हो जाती है और उसके आँखो से खुशी की आँसू बहने लगती है।

दूसरे सवैये में भी राम के सीता के प्रति प्रेम प्रकट हुआ है जिससे सीता के आँखो से खुशी की आँसू बहने लगती है।